UNIT I

Saathi

Date __/__/__

आर्थिक भूगोल की अभिनव प्रवृतियाँ

आर्थिक भूगोल की अभिनव प्रवृतियों मे आर्थिक भूगोल की निम्न लिखित संकल्पनाओ को सम्मिलित किया जाता है।

आर्थिक भूदृश्यो की संकल्पना – आर्थिक भूगोल की सर्वप्रधान आधारभूत संकल्पना अर्थात भूदृश्य की है। आर्थिक भूदृश्य मे विशिष्ठ क्षेत्र की सुस्पष्ट आर्थिक विशेषताओ आर्थिक प्रादेशिक अर्थतन्त्र संगठन की अभिव्यक्ति है जैसे– कृषि उद्योग एव उत्खनन व्यापार आदि से सम्बन्धित विभिन्न तत्वो वस्तुओ उपकरणो आदि का समुच्चयिक स्वरुप आर्थिक भूदृश्य मे उभरता है।

आर्थिक भूदृश्य गतिशील तत्व के रुप मे – आर्थिक भूदृश्य एक ओर मनुष्य के तात्कालिक आर्थिक कार्यो को प्रभावित करता है। तो दूसरी ओर इन कार्यो से प्रभावित होकर स्वयं परिवर्तित भी होता रहता है। इस पर मनुष्य के भूतकालीन आर्थिक कार्यो का संकलित रुप दर्शाता है।

वर्तमान आर्थिक भूदृश्य संसाधन संरचना तकनीकी प्रक्रियाऐ एव आर्थिक विकास की अवस्था का द्योतक है।

गत्यात्मक आर्थिक भूदृश्य मे परिवर्तन आकस्मिक अथवा छिट पुट नही होते प्रत्युत किसी क्रमबद्ध प्रपश्चात से होती है। कही किसी विशेष आर्थिक तत्व या विधि का उदभव होता है। तथा पुराने तत्व एव प्राविधिकी लुप्त होने लगती है। जैसे प्रदेश का क्रमानुसार प्रारम्भ विस्तार विकास

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

8/9/2020

Date ___ / ___

प्रौढ़ता प्राप्ति तथा अवनति भी होते हैं। यही बात आर्थिक भूदृश्य के लिए भी चरितार्थ होती है।

आर्थिक क्रियाकलापो की अवस्थिति एवं स्थानीयकरण —

आर्थिक भूगोल मे आर्थिक क्रियाकलापो की पृथ्वी तल पर स्थिति बताना ही पर्याप्त नहीं है। वरन् आर्थिक क्रियाकलाप से जुड़े सभी पक्षो की व्याख्या वितरण अन्तर्सम्बन्ध प्रभावित करने वाले कारक तथा पदानुक्रम आदि का भी अध्ययन है **उदाहरण** के लिए यदि किसी स्थान पर सूती वस्त्र उद्योग कार्यरत है। तो केवल उसकी भौगोलिक स्थिति ही बताना पर्याप्त नही वरन् सूती वस्त्र उद्योग को उस विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के प्रभावित करने वाले सभी कारको का भी आवश्यक है

आर्थिक प्रदेशो की संकल्पना — किसी देश या क्षेत्र मे क्षेत्रीय आर्थिक भिन्नता के कारण विभिन्न स्तरो के आर्थिक भूदृश्य विकसित होते हैं। आर्थिक भूदृश्यो मे मिलने मे वाली कुछ समान्य विशेषताओ के तथा उनकी क्षेत्रीय सम्बद्धताओ की समरूपता के आधार पर आर्थिक प्रदेशो का सीमांकन किया जा सकता है

स्थानिक कार्यात्मक संगठन — किसी प्रदेश मे कई आर्थिक प्रदेशो के परस्पर सम्बंध होने पर स्थानिक कार्यात्मक संगठन निर्मित होते हैं। स्थानिक कार्यात्मक सम्बन्ध प्रदेश के निचले स्तरो पर बहुत कम विकसित मिलते हैं। जबकि औद्योगिक व्यापारिक आर्थिक तन्त्र मे यह विश्व स्तर तक जुड़े मिलते है।

प्राचार्य
[illegible] महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date / /

प्रादेशिक आर्थिक विकास – आर्थिक भूगोल की प्रादेशिक आर्थिक विकास की संकल्पना क्षेत्रीय सम्बद्धता द्वारा संसाधनो के विवेकपुर्ण ढग से उपभोग पर बल देती है। आर्थिक भूगोल की मुख्य उद्देश्य किसी प्रदेश विशेष मे आर्थिक विकास के स्तर पर निधारण करना तथा आर्थिक विकास के लिए प्रादेशिक नियोजन करना है।

विनाशहीन आर्थिक विकास –

२०वी शताब्दी मे मानव द्वारा आर्थिक विकास की गति प्रदान करने के उद्देश्य से प्राकृतिक संसाधनो का अविवेकपुर्ण ढग से प्रयोग किया है जिसके कारण वर्तमान मे समस्त मानव जाति को पर्यावरण असन्तुलन की अनेक समस्याओ –

जैसे – हरित गृह प्रभाव ओजोन गैस का विलुप्तीकरण बढता मरुस्थलीकरण पर्यावरण प्रदुषण आदि को सामना करना पड़ रहा है। आर्थिक भूगोल की इस संकल्पना मे आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनो का विवेकपुर्ण ढग से उपभोग किया जाय तथा विनाशरहित आर्थिक विकास के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएँ

स्थानिक कार्यात्मक अन्तक्रियाएँ – एक आर्थिक प्रदेश के दुसरे आर्थिक प्रदेशो मे कार्यात्मक अन्तसम्बध होते है। आर्थिक प्रदेशो का आस्तित्व का विकास प्रभावित होता है। यही नही किसी भी देश के आर्थिक विकास का आधार भी यही प्रादेशिक कर्यात्मक अन्तसम्बध होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page No.